4 Aug.

History of Painting :-

Painting का इतिहास प्रागैतिहासिक कलाकारो द्वारा बनाई गई कलाकृतियों तक जाता है। और सभी संस्कृतियों तक फैला हुआ है। यह पुरातन काल से चली आ रही एक सतत, यद्यपि समय-२ पर बाधित, परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है।

संस्कृतियों, महाद्वीपो और सहस्त्राब्दियों से परे, चित्रकला के इतिहास में रचनात्मक की एक ~~स्वच्छ~~ सतत नदी शामिल है जो २१ वी सदी में भी जारी है। २० वी शताब्दी की शुरुआत तक यह मुख्य रूप से प्रतिनिधित्वात्मक, धार्मिक और शास्त्रीय रूपांकनो पर निर्भर था। जिसके बाद अधिक विशुद्ध रूप से अमूर्त और वैचारिक दृष्टिकोण को समर्थन मिला।

→ भारत मे चित्रकला और कला का इतिहास मध्यप्रदेश की भीमबेटका गुफाओं की प्रागैतिहासिक काल की चट्टानों पर बने पशुओ के रेखांकन और चित्रांकन के नमूने से प्रारम्भ होता है।

महाराष्ट्र के नरसिंहगढ की गुफाओं के चित्रों में चितकबरे हिरणों की खालों को सूखता हुआ दिखाया गया है।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

Qu. प्राचीनकाल की भीमबेटका गुफाओं में पेंटिंग कितनी पुरानी है?

As. 5500 ई. पू.

The father of Modern Art :
Raja Ravi Verma

⊃ भारत मे चित्रकला और कला का इतिहास मध्यप्रदेश की भीमबेटका गुफाओं की प्रागैतिहासिक काल की चट्टानों पर बने पशुओं के रेखांकन व चित्रांकन के नमूनों से प्रारम्भ हुआ। इसके हजारों सालों बाद रेखांकन व चित्रांकन हडप्पाकालीन सभ्यता की सील पर भी पाया जाता हैं।

हिन्दु और बौद्ध दोनों साहित्य की कला के विभिन्न तरीकों और तकनीकों के विषय मे संकेत करते हैं जैसे - लेप्यचित्र, लेखाचित्र धूलिचित्र।

पहली प्रकार की कला का सम्बन्ध लोक कथाओं तथा दूसरी प्रागैतिहासिक वस्त्रों पर बने रेखा चित्र और चित्रकला से सम्बन्ध है तथा तीसरी प्रकार की कला फर्श पर बनाई जाती हैं।

Teacher's Signature ....

⇒ ईसा पूर्व पहली शताब्दी के लगभग चित्रकला षड्ग (चित्रकला के 6 अंग) का विकास हुआ।

यशोधर पंडित ने आलेख्य (चित्रकला) के 6 अंग बताये हैं।

1) रूपभेद
2) प्रमाण

10/Aug.

Chapter- 1

प्रागैतिहासिक काल,

50,000 ई. पू. से 5,000 ई. पू.

History of Painting

A. चित्रकला का उद्भव उन्नति व विकास, मानव विकास के साथ प्रारम्भ से ही जुड़ा है। मनुष्य के भीतर की सृजन शक्ति कितनी प्राचीन व कितनी गहराई तक व्याप्त है। इसका ज्वलंत उदा० हमें प्रागैतिहासिक शिलाचित्रों से प्राप्त होते हैं।

कला मानव विज्ञान की जीवन की चिर संगनी है। प्रागैतिहासिक काल में मानव ने अपने पेट की भूख को शान्त करने के लिये व जंगली जानवरों से अपनी रक्षा करने के लिये अनेक उपाय किये। इन्हीं विभिन्न उपायों के बीच चित्रकला का भी उद्भव हुआ।

→ आदिमानव ने अपने जीवन की कोमल भावनायें जैसे आखेट के दृश्य व पशुओं की मनोरम छवी का आंकन किया। व इन अनुभवों को तुलिका के सहारे गुफाओं और चट्टानों पर उभारा। प्रागैतिहासिक काल को पाषाण युग के नाम से भी पुकारा जाता है।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

→ प्रागैतिहासिक काल को ३ भागों में विभाजित किया :-

1) पूर्व पाषाण काल [३०,००० ई.पू. – २५,००० ई.पू.]
2) मध्य पाषाण काल [२५,००० ई.पू. – 10,000 ई.पू.]
3) उत्तर पाषाण काल [10,000 ई.पू. – ३,००० ई.पू.]

1) **पूर्व पाषाण काल** :- इस समय में मनुष्य का उद्भव हुआ था। उसके प्रारम्भिक रूप को लिया गया है। जिसमें मनुष्य केवल पेट भरने के लिये शिकार करता था और कच्चा मास खाते थे। रहने के लिये कन्दराओं का उपयोग करते थे। इस समय के व्यक्ति शिकार करने हेतु पत्थरों का उपयोग किया करते थे। इतिहासकारों ने इस समय के मानवों को "क्वार्टी ज्वाइट" कहते थे। पूर्व पाषाण काल के उदा. मद्रास से गंटूर जिले में अंगोला या पश्चिमी भारत से प्राप्त हुये हैं।

2) मध्य पाषाण काल :- इस समय के लोग एक समूह के रूप में रहने लगे किन्तु रहन सहन व खान-पान पूर्व पाषाण काल के समान ही था।

Teacher's Signature ....

किन्तु यहाँ पर शिकार करने के लिये पत्थर के नुकीले हथियारों का उपयोग किया गया। इस समय के उदा. भी मद्रास के आस-पास ही पाये जाते हैं। (नुकीले पत्थर)

उत्तर पाषाण काल :-

उत्तर पाषाण काल युग के लोग सभ्यता से रहने लगे, शिकार हेतु पत्थर के हथियारों का उपयोग किया। माँस को पकाकर खाया जाने लगा। इस समय के लोग एक समुदाय में रहने लगे, जिनके स्वयं के बनाये रीति नियम, कानून कायदे बनाये गये, किन्तु इन सभ्यताओं का एक सीमित क्षेत्र था। इस समय के लोग जादू-टोना व अंधविश्वासों में विश्वास करते थे जिसके चलते चित्रकला का विकास हुआ। समय उपरान्त नृत्य उत्पादन का भी आयोजन किया करते थे। इन्हीं विषय को लेकर चित्रकला का विकास हुआ।

Exam. - Rajasthan, etc.

प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला का विकास क्रम :-

प्रागैतिहासिक लोगों में चित्रकला के विकास के कई कारण रहे हैं जिन में से प्रमुख अंधविश्वास अपने विजय के इतिहास को अमर बनाने का या शिकार हेतु चित्रों का निर्माण किया।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

प्रागैतिहासिक काल में व्यक्ति जिस पशु का शिकार करता था उसी पशु को शिकार करते समय जैसा दृश्य उत्पन्न होता है या जिन साधनों से पशु को मारा जाता है, उसी कहानी को गुफाओं की चट्टानों पर पत्थर से खोद कर बनाया गया। इन लोगों में यह अंधविश्वास पैदा हो गया था कि जिस पशु का हम शिकार करने जा रहे हैं, उस पशु का शिकार का दृश्य पहले ही चित्रों के रूप में करने से वह पशु आसानी से वश में आ जाता है।

इसके अलावा उन लोगों में यह मान्यता थी कि जादू-टोना से भी जीवन में प्रभाव पड़ता है।

चित्रण माध्यम :-

प्रागैतिहासिक काल में शैल चित्रों का निर्माण विषय के अनुसार पत्थर से चट्टानों को खोद कर रेखाएँ बनाई जाती थी इसके बाद इन गहरी रेखाओं में गेरू पीस कर चर्बी मिश्रित करके इन गहरी रेखाओं में भर दिया जाता था।
सम्भवत: शेष हिस्सों में सपाट रंग भरा जाता होगा किन्तु किसी माध्यम का प्रयोग नहीं किया गया। इसलिये रेखाओं के अतिरिक्त रंग प्राप्त नहीं होता। गेरू को पीसने के लिये शिलाओं का प्रयोग किया गया। इसके बाद कलर प्लेट के रूप में जानवर की हड्डियों का प्रयोग किया गया।

Teacher's Signature ....

ब्रश के लिये बाँस को पत्थर से कूटकर तैयार किया गया था फिर इन रेखाओं मे हाथ से भी रंगो को भरा गया।

रंग विधान :- प्रागैतिहासिक शिला चित्रो में सीमित रंगो का प्रयोग किया गया है जिसमें प्रमुख रूप से गेरू, खड़िया (सफेद मिट्टी), रामरज व कोयले का प्रयोग किया गया

प्रागैतिहासिक कालीन शैल चित्रो के उदा. :-

1) **भीम बेटका :-** भीम बेटका होशंगाबाद से भोपाल रेल मार्ग पर बरखेड़ा स्टेशन से 40 km दूर है। यहाँ पर कुल 600 गुफाये है जिनका समय 5,000 ई. पू. - 10,000 ई. पू. तक आंका गया है इनमे से कुछ गुफाओ में शैलचित्र प्राप्त हुये। जिनका समय भी उतना ही प्राचीन है। विश्व के प्राचीन स्थान के भीमबेटका का महत्वपूर्ण स्थान है। भीम बेटका की खोज का श्रेय प्रो. वाकणकर को जाता है। यहाँ पर 2 प्रकार के चित्र प्राप्त हुये हैं।

— पहले प्रकार के चित्रो में जंगली जानवरो को लिया गया है। जैसे बारह सिंगा, सूअर, रीछ, हिरन, भैंसे आदि को चित्रित किया गया।

— दूसरे प्रकार के चित्रों में मानव के विकसित रूप को लिया गया है। जैसे खेती करते हुये जानवरो को पालते

Teacher's Signature ....

पालने हेतु आखेट दृश्य, आदि दृश्य। इन चित्रों में आदि मानव ने लाल, काले व सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है।

2) विल्ला सरगम :- यह स्थान मद्रास स्टेट के अन्तर्गत आता है। यहाँ पर भी 5,000 ई० पू० के चित्रों के उदा० प्राप्त होते हैं। इस गुफा में जादू-टोना के तथा पशुओं के शिकार दृश्यों प्राप्त होते हैं।

3) बेलारी :- ~~यह स्थान मद्रास स्टेट के अन्तर्गत आता है यहाँ पर भी 5,000 ई० पू० के उदा० प्राप्त होते हैं इस गुफा में जादू-टोनो के तथा पशुओं के शिकार दृश्यों प्राप्त होते हैं~~ यह स्थान दक्षिणी भारत में स्थित है। इस गुफा में भी शिकार के दृश्य व व जादू टोनो के प्रतीक दृश्यों का चित्रांकन किया गया है।

4) हस्ती हरण :- मिर्जापुर के पास विजयगढ़ नामक दुर्ग के समीप यह स्थान है। यहाँ गैंडे के समूह का आखेट करते हुये अत्यन्त रोचक दृश्य चित्रित किया गया है।

Page No.
Date

5) **कैमूर की पहाड़ियाँ :-** (जो कि मिर्जापुर के निकट विंध्याचल क्षेत्र में स्थित है

A. **सिंघनपुर :-** इस गुफा की खोज W. एण्डर्सन ने की यहाँ पर 50 से भी अधिक चित्र प्राप्त हुये हैं। यहाँ पर रायगढ़ रियासत में माण्ड नामक नदी के किनारे पूर्वी दिशा में चित्रित गुफायें प्राप्त हुई हैं।

- चित्र Drawing :- घोड़ा, बारहसिंहा, हिरन, शाहीबरना, भैंसा, साण्ड, छिपकली, हाथी व खरगोश के आखेट चित्र अत्यन्त मार्मिक प्राप्त हुये हैं।

- साण्ड को पकड़ते हुये तथा बरछी से भेदते हुये पशुओं का शिकार दृश्य बनाया गया है।

- घायल भैंसा, बुरी तरह तीरों से छिदा हुआ है, और आदिवासी चारों तरफ से भाला लिये हुये खड़े हैं।

B. **मिर्जापुर :-** विन्ध्याचल पर्वत की कैमूर पहाड़ियों से भारतीय गुफा चित्र सबसे पहले यहीं से प्राप्त हुये है। मिर्जापुर U.P. में स्थित हैं। यहाँ पर 100 से भी अधिक चित्र प्राप्त हुये हैं व गुफाओं की संख्या भी 30 से अधिक हैं। जिनका नाम लिखीनिया व 1, 2, 3 से 30 हैं।

चित्र-1 हाथियों के पकड़ने का दृश्य बड़ी कुशलता से चित्रित किया है जो लिखीनियाँ। गुफा में स्थित हैं।

Dancing पशुओं का आखेट करने के पश्चात खुशी से नृत्य वादन करते हुये सुन्दर चित्र लिखीनिया 2 से प्राप्त हुआ है।

एक लम्बी चोंच वाला पक्षी को भी तांत्रिक या अंधविश्वास के रूप में चित्रित किया हुआ है। यह भी लिखीनिया से प्राप्त हुआ है।

C. पंचमढ़ी =)

इस गुफा की खोज का श्रेय "H गार्डन" को जाता है। Dr. H. गार्डन

इन गुफाओं के चित्रों के साथ-2 अभिलेख भी प्राप्त हुये हैं जिनके आधार पर इन्हें 9वीं तथा 10वीं सदी का माना गया है। यहाँ विभिन्न गुफाओं में अनेक चित्र प्राप्त हुये हैं।

चित्र-1 बाजारकेव (गुफा) में बकरी का चित्र प्राप्त हुआ, जिसे ज्यामितिक आलेखन के रूप में अंकित किया गया।

चित्र-2 माण्डादेव : इस गुफा में शेर का आखेट करने का दृश्य प्राप्त हुआ है जबकि

Teacher's Signature ....

Page No. —
Date

रमाली की खोह मे सांभर का आखेट करने का दृश्य प्राप्त हुआ हैं।

8. होशंगाबाद :- होशंगाबाद मध्य प्रदेश मे हैं यह भीमबेटका से 45 मील दूर नर्मदा के तट पर स्थित है। जहाँ से कुछ गुफा प्राप्त हुई हैं। जिनमें प्रागैतिहासिक चित्रांकन के अवशेष प्राप्त हुये हैं।

Draw-1 महामहिम का चित्र, जो दोहरी रेखाओ से विस्तार से अंकित हैं।

Draw-2 विशाल हाथी का चित्र

Draw-3 हाथी के सूंड के सामने एक छोटे महिश का चित्र है जिसकी टांगे पतली- लम्बी हैं।

Draw-4 चार धनुर्धारी जो समूह में बनायें गये हैं। जो स्टेनसिल पद्धति से बनाये गये हैं।

9. चक्रधरपुर :- यह बिहार मे स्थित हैं यहाँ पर मनुष्य के लेटे हुये चित्र बनाये गये हैं उनके समीप कुछ व्यक्ति अपनी भुजायें फैलाकर अपनी विजय पर गर्व कर रहे हैं।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

f. भाडनाडु के एडकल :- यह दक्षिण भारत में स्थित हैं। इन गुफाओं में जादू-टोना के चित्र प्राप्त हुये हैं। जैसे स्वस्तिक चिन्ह, सूर्य के चिन्ह, चौकटे खाने आदि को लाल व काले रंगों से चित्रित किया गया हैं। यह सभी जादू टोनो के प्रतीक चिन्ह हैं। यहाँ पर मनुष्य के सिर पर कुछ पैने ... चित्र किया गया हैं। जो स्पेन के चित्रों के समान हैं।

प्रागैतिहासिक काल के चित्रों के निर्माण के उद्देश्य

- अपने चारों ओर के वातावरण की स्मृति को बनाये रखने के लिये।
- अपने विषय के इतिहास को व्यक्त करने की भावना के वशीभूत होकर चित्रों का निर्माण।
- अमूर्त भावों को मूर्त रूप देना।
- आलंकरण, सजावट अपने निवास स्थान को सुन्दर बनाने के लिये चित्रों का निर्माण।
- गुफावासी मानव ने देवी-देवताओं के प्रकोपों से अपनी रक्षा करने के लिये प्रतीक चिन्हों का निर्माण किया। — त्रिशुल, सूर्य, अस्टकोण, स्वस्तिक।

विशेषतायें :-

इस काल के चित्र चट्टानों की दीवारो, फर्श, छतों आदि पर अंकित किये जाते हैं।

Teacher's Signature ....

→ ये चित्र खिरौंजी, रामरज, चूना - पत्थर आदि के लाल- पीले तथा सफेद रंगों के द्वारा बनाये गये हैं। काजल से काला रंग बनाकर प्रयोग में लिया गया।

→ यद्यपि इस काल के चित्र भद्दे, कठोर तथा असंयत हैं। परन्तु इनमें गति व सजीवता विद्यमान हैं।

12/Aug

Chapter - 2

[Ajanta Caves]

अजन्ता :- भारतीय कला के इतिहास में बौद्ध कला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शास्त्रीय कला के इस चरम आदर्श का प्रमुख कला केन्द्र अजन्ता गुफाओं का विश्व में सर्वोच्च स्थान है।

प्रसिद्ध विचारक लॉरेन्स बिनियन ने अजन्ता की श्रेष्ठता इस शब्दों में दर्शाई है।
अजन्ता की कला एशिया और एशिया की कला इतिहास में उतना ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है जितना की यूरोप और यूरोप की कला के इतिहास में विएना व फ्लोरेन्स की कला का है।

अजन्ता :- अजन्ता महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले से 102 km. उत्तर-पश्चिम में जलगाँव, फरदापुर मार्ग पर स्थित है।
यहाँ तक पहुँचने के लिये औरंगाबाद रेलवे स्टेशन तक ट्रेन से आने के पश्चात बस या टैक्सी द्वारा पहुँचा जा सकता है।

Page No.
Date

गुफाये - 30 (अजन्ता में)

Location → Ajanta, Aurangabad district Maharashtra, India.

Criteria → Cultural i, ii, iii, vi
Reference → 242 [/]
Area → 8,242 ha.
Coordinates → 20°33'12" 75°42'01" E.

→ यह स्थान बाघोरा नदी के घुमावदार मोड़ पर 250 फुट ऊँची अर्द्धवृत्ताकार पहाड़ियो पर कुल 30 गुफाओं का निर्माण किया गया हैं।

अजन्ता मे 2 प्रकार की गुफाओं बनाई गई है →
1) चैत्य
2) विहार

चैत्य में बौद्ध भिक्षु पूजा किये करते थे। तथा विहार उनके आवास स्थान थे। चैत्य की ऊचाई विहार से अधिक होती थी। अजन्ता में 9, 10, 19, 26, 2 ये सभी गुफायें चैत्य हैं। तथा अन्य सभी विहार हैं। गुफा नं. 19 सबसे बड़ा चैत्य हैं। तथा गुफा नं. 16 सबसे बड़ा विहार हैं।

अजन्ता गुफाओं की खोज :- मुगल काल में मुगलीय सेना सतपुड़ा की पहाड़ियों के पास से निकलती थी किन्तु किसी का भी इस बात की ओर ध्यान नहीं गया, लेकिन अंग्रेजों ने भारतीय उपद्रवीयों को दबाने के लिये इन पहाड़ियों का उपयोग किया। इसी उद्देश्य से एक भारतीय सैनिक उपद्रवियों को दबाने के लिये इन पहाड़ियों की ओर गये।
जहाँ पर उस सैनिक ने लोमड़ी देखी। इस लोमड़ी का शिकार करने के लिये उसका पीछा किया, पीछा करते हुये वह एक गुफा में घुस गया और चारों तरफ सुन्दर चित्र देखे। इस गुफा के अन्दर भित्ति चित्र देखे। जिसकी सूचना जेम्स ई. अलेक्जेण्डर ने 1824 में रॉयल सोसायटी लन्दन को दी। किन्तु इस ओर किसी का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ।

1843 में सर जेम्स फरगुसन ने इन चित्रों का पुनः निरक्षण करके इन समस्त 30 गुफाओं की खोज की। तथा महारानी विक्टोरिया को पत्र लिखा। जिसमें महारानी विक्टोरिया ने जनता के खर्च पर इन चित्रों की अनुकृतियाँ तैयार करवाई। शेष सुरक्षा की जिम्मेदारी निजाम को दी गई। लेकिन निजाम ने सुरक्षा करने के बजाय विभिन्न धुनिक वर्गों को तथा विभिन्न म्यूजियम को आबाद करने के लिये चित्रों को बेच दिया। जिससे चित्रों की भारी हानि हुई। 1909 से 1911 तक इन चित्रों पर जालियाँ लगा दी गई तथा रसायनों द्वारा इन चित्रों की सुरक्षा की गई।

Teacher's Signature ....

अजन्ता की गुफाओं का समय :-

अजन्ता की गुफाओं का निर्माण 250 फीट ऊँची पहाडियों पर 600 m. की लम्बी दूरी पर 30 गुफाएँ बनाई गई। जिनका समय 200 ई.पू. से 600 ई. तक माना गया हैं इन गुफाओं का निर्माण वाकाटक वंश ने करवाया किन्तु बाद में की जो गुफायें बनी उन गुफाओं का निर्माण व चित्रकारी गुप्त वंश ने करवाई। गुफा नं. 6 से लेकर 13 तक हिनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। शेष गुफायें महायान से सम्बन्धित हैं। सभी गुफायें बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं। इन गुफाओं में बौद्ध जातक कथाओं के चित्र बने हैं। केव नं. 9 सबसे प्राचीन हैं व गुफा नं. 1 सबसे नवीन हैं।

अजन्ता के गुफाओं की अनुकृतियाँ :-

लन्दन से महारानी विक्टोरिया के आदेश पर जनता के खर्च पर अजन्ता के चित्रों की अनुकृतियाँ तैयार करवाई इन अनुकृतियों को तैयार करने हेतु मेजर राबर्ट गिल को 1847 ई. में भारत भेजा जिन्होंने 30 चित्रों की अनुकृतियाँ तैयार की।

Teacher's Signature ....

1. गिल द्वारा बनाये गये ३० चित्र लन्दन भेज दिये तथा बाद के बनाये ५ चित्र अपने साथ लेकर गये। पूर्व के ३ चित्र क्रापस्टल पैलेस में जल गये व बाद के ५ चित्र सुरक्षित हैं।

२. १८७२ ई. में सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट के [Sir J. J. The School of Art] Principal ग्रिफिथ्स महोदय ने अजन्ता के चित्रों की अनुकृतियाँ बनाई, जो कि लन्दन के विक्टोरिया एण्ड अलबर्ट म्यूजियम के साउथ केंसिंग्टन प्रदर्शनी में प्रदर्शित की गई। किन्तु आग लग जाने के कारण ये चित्र जल कर राख हो गये।

३. ग्रिफिथ्स महोदय ने पुनः अजन्ता की चित्रों की अनुकृतियाँ तैयार करवाई तथा बाद में जापान के सहयोग से १८९६ में अनुकृतियाँ तैयार करवाई गई।

४. इसके उपरान्त डॉ. बर्गेस ने फोटोग्राफी एल्बम तैयार करवाया। जिसे इंडिया ऑफिस ने दिल्ली में सुरक्षित रखा गया है। फिर इसके पश्चात लेडी हेरिंघम लन्दन से आने के पश्चात १९०९ से १९११ के मध्य भारतीय एवं यूरोपियन चित्रकारों के सहयोग से जैसे नन्दलाल बासु असित कुमार हलदार, वेंकटप्पा शिव नारायण गुप्ता, लपूक आदि चित्रकारों के सहयोग से अजन्ता के चित्रों की अनुकृतियाँ तैयार करवाई

अजन्ता की गुफाओं का निर्माण →

रवादार पत्थरों पहाड़ियों को काटकर इन गुफाओं का निर्माण किया गया। जिसमें छैनी व हथौड़े का प्रयोग किया गया। इन दीवारों पर चित्र बनाने के लिये सपाट प्लास्टर किया गया। इन प्लास्टर की मोटाई 1 इंच से मोटी थी। ये प्लास्टर विशिष्ट रूप से तैयार किया गया, जिसमें गोबर, चिकनी मिट्टी, बजरी, उड़द का पानी आदि पदार्थों को मिलाकर तैयार किया गया। इन सब के मिश्रण को कई महीनों तक पानी डालकर मिश्रित किया जाता था। तत् पश्चात् गुफाओं की खुरदरी दीवारों पर प्लास्टर कर दिया गया। इसके उपरान्त अण्डे की झिल्ली के समान एक पतला प्लास्टर और तैयार किया गया। जिसे प्लास्टर के ऊपर लगा दिया जाता था अब ये दीवार चित्र बनाने के लिये उपर्युक्त थी। बाद की गुफाओं में प्लास्टर के गारे में गुड़ का पानी मिलाया जाने लगा। समयोपरान्त चावल के माँड का उपयोग किया गया।

अजन्ता की चित्रों की हानि के कारण →

1) अजन्ता की प्रसिद्धि ही अजन्ता की हानि का कारण बनी। क्योंकि विभिन्न धनी वर्गों के उन चित्रों को दीवार से उखाड़ कर अपने घर सजाने के लिये ले गये

Teacher's Signature ....

Page No.	
Date	

2) आस-पास के नजदीकी लोग उन गुफाओं को देखने आये व नुकीली चीजों से खुरच कर अपना नाम पता लिख दिया।

3) डा॰ बर्ड जो बम्बई संग्रहालय के अध्यक्ष थे। उन्होंने अपने संग्रहालय को आबाद करने के लिये अजन्ता के चित्रों को पपड़ी सहित उखड़वा दिये।

4) निजाम ने पैसे के लालच में आकर चित्रों का सौदा कर दिया।

5) बौद्ध भिक्षुओं के खाना बनाने से तथा चमगादड़ों के कारण भी ये चित्र धुंधले हो गये।

4) <u>अजन्ता शैली के रंग</u> :- अजन्ता के चित्रों में कई प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया, जिनमें खनिज, रसायनिक व वनस्पति रंग शामिल हैं।

<u>खनिज</u> :- गेरू, हिरमिंज, हरा भाटा, गन्दा हरा रंग (टेरावर्ट), लेपिस लाजुली (गहरा नीला) रंग है जो फारस से मंगवाया जाता था। खड़िया, चूना-भाटा, सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

वनस्पतिक → प्योड़ी (पीला), फूलों का रस (लाल), पत्तियों को पीस कर (हरा) रंग तैयार किया गया।

रासायनिक → रासायनिक रंगों में सिंदुर का प्रयोग किया गया। इसी कारण अजन्ता में जहाँ भी सिंदुर का प्रयोग किया गया। वहाँ पर सिलन के कारण गंधक का प्रभाव आ गया, जिसके प्रभाव से सिंदूर लाल की जगह काला होता गया।

अजन्ता की चित्रण पद्धति :→ अजन्ता में अब तक दो प्रकार के भित्ति चित्र मिले हैं। जिनमें से एक सूखी पद्धति का (टेम्परा) दूसरा फ्रेस्को पद्धति का मिला। फ्रेस्को पद्धति से बना चित्र जो गीली पृष्ठ भूमि पर बनाया जाता था। किन्तु अजन्ता के चित्र फ्रेस्को व टैम्परा दोनों के मिश्रण से बने हैं। इसीलिये इस पद्धति का नाम फ्रेस्को सैम्को पड़ा।

सबसे पहले चित्रकार चित्रभूमि पर किसी भी विषय पर चित्रांकन गहरें भूरे रंग से रेखांकन करता था। इसके लिये या तो चित्रकारों ने मुक्त हस्त रेखांकन किया या फिर चर्बे के द्वारा रेखांकन किया गया है।

Teacher's Signature ....

(हिरन की पतली खाल) पर रेखांकन करके पृष्ठ भूमि पर या भित्ति पर रख कर गेरू की पोटली फेर दी जाती थी। जिससे हिरन की खाल में रेखांकन के लिये किये गये बारिक छिद्रों में से गेरू पाउडर छान कर दीवार पर लग जाता था। इसके पश्चात गुड़ का पानी या चावल का माण्ड रंगों में मिश्रण करके रंगों की उपर्युक्त तान बनाकर सपाट ब्रश से लगा दी जाती थी।

→ इस कार्य के लिये गिलेहरी के बालों की ब्रशों का प्रयोग किया गया। तत्पश्चात हल्की व भारी तान बना कर छाया प्रकाश का अंकन कर दिया गया। इसके बाद पुनः गहरे भूरे रंग से पतली तूलिका द्वारा चित्रों की घुलाई कर दी गई। इसके पश्चात इस चित्र को गीला कर दिया और कोई मोटा कपड़ा या टाट को गीला करके उस चित्र पर डाल दिया गया। ये क्रम 15 दिन से एक माह तक चलता रहता है। जिससे चित्र में लगाये गये रंग पपड़ी न बनाकर अन्दर तक बैठ गये। इस क्रिया के उपरान्त चित्र को घुटकर नारियल का तेल पोत दिया जाता था। जिससे चित्र में चमक उत्पन्न हो जाती है।

→ अजन्ता की गुफाओं के चित्र :-

Page No.
Date

[गुफा नं. 9] :- ग्रिफिथ्स महोदय ने अजन्ता की गुफा नं. 9 में एक प्लास्टर उखाड़कर एक चित्र खोजा, जो सम्भावत् भरहुत, सांची के समकालीन प्रतीत होता है। इसी स्थान पर दूसरा सुन्दर चित्र बनाने के लिये प्लास्टर चढ़ा दिया गया। इस चित्र में बौद्ध स्तूप की पूजा करते जाते हुये स्त्रियों को दिखाया गया है। जिसमें महिलाओं को मोटे भारी गहने पहने हुये दिखाया गया।

→ इस चित्र में 4 रंगों का प्रयोग किया गया है। काले, पीले, हरे तथा खिरौंजी साथ ही इस गुफा में अनेक प्रकार के वृक्षों व फलों का भी अंकन किया गया है।

[गुफा नं. 10] :- इस गुफा बुद्ध को हस्थि जातक कथा के रूप में विभिन्न प्रकार से दर्शाया गया है। भगवान बुद्ध हस्थी के रूप में एक तालाब में नहा रहे हैं तथा अपनी सूंड से हथनी के ऊपर पानी डाल रहे हैं। या हथनी को कमल पुष्प देते हुये दर्शाया गया है। एक अन्य चित्र में हाथी सरोवर में नहा रहा है तथा एक मगर हाथी को पकड़ रहा है। हाथी उसे छुड़ाने के प्रयास में है।

Teacher's Signature ....

Date

एक जंगल में एक व्याघ्र प्रवेश कर चुका था। उसके सामने बौद्धिसत्व बाघ की भूख मिटाने के लिए अपने आप को समर्पित कर देते हैं।

काशी नरेश की पत्नी पूर्व जन्म में गौतम बुद्ध की पत्नी थी। इसलिए राजा द्वारा षड्दन्त हाथी का दाँत कटवाने का आदेश दिया। जिसे बागियों में लगा देखकर महारानी सुभद्रा अचेत हो जाती हैं।

इसी गुफा में श्याम जातक कथा का भी चित्रण किया गया है। पूर्व जन्म में बुद्ध श्याम के रूप में अवतरित हुये जो अपने माता-पिता को कावड़ में बिठा कर तीर्थ यात्रा पर ले जाते हैं। रास्ते में जंगल में काशीराज शिकार करने आते हैं। वहाँ पर श्याम द्वारा घड़ा भरने पर तीर चलता है। जो श्याम के सीने पे लगता है। इस कथा को यहाँ पर चित्रित किया गया है और इसे श्रवण जातक कथा। इस गुफा के चित्रों का संयोजन अपूर्व है। आकृतियाँ उच्च कोटि की है। यह गुफा हीनयान मत की है।

Teacher's Signature ....

2) नीलगीरी हाथी के आक्रमण का दृश्य :-

नीलगिरी नामक हाथी के द्वारा किये गये आक्रमण का दृश्य है। इस चित्र में दिखा रहा है। इस चित्र में एक आदमी के 6 कोने वाला एक चित्र आइनों में दिखा रहा है। जिसमें प्रलय के बारे में 3 दृश्य चित्रित किये गये। उद्यान बाजार, भारतीय मानव जनों को, जो लहरदार नदी को देखकर इधर-उधर भाग रहे हैं।

3) छदन्त जातक कथा :- काशी नरेश की पत्नी सुभद्रा पूर्व जन्म से गौतम बुद्ध की पत्नी थी। इस लिये राजा के आदेश पर छदन्त हाथी के दाँत काटे गये, जिसे बग्गी में लगे देखकर सुभद्रा अचेत हो जाती है।

4) महाहंस जातक कथा :- यह चित्र रंग संयोजन एवं कम्पोजिशन की दृष्टि से विश्व का सर्वश्रेष्ठ भित्ति चित्र है। काशी राज ने जंगल में सफेद स्वर्ण हंस को देखा। इसी बात को लेकर काशी राज ने बहेलियों को इस हंस को पकड़ने का आदेश दिया। बहेलिये ने इस हंस को पकड़कर महाराज के समक्ष पेश करते हैं। तब ज्ञात हुआ कि ये महात्मा बुद्ध हैं। काशी नरेश ने इस हंस को ऊँचे सिंहासन पर बैठाया और छात्र लगवाया।

Teacher's Signature ....

राज्य दरबार के सभी मंत्री सहित राजा ने अपने परिवार के साथ इस हंस से बुद्ध उपदेश ग्रहण किये।

5) ~~स्याम (श्रवण)~~ सुशीम जातक कथा :- पूर्व जन्म में बुद्ध सुशीम के रूप मे अवतरित हुये थे। और देश देशान्तर बुद्ध का उपदेश दिया।

6) श्याम (श्रवण) जातक कथा :-

7) महिष जातक कथा :- पूर्व जन्म में बुद्ध को महिष के रूप मे बौद्ध का उपदेश देते हुये, दिखाया गया है।

8) मृग जातक कथा :- पूर्व जन्म में बुद्ध को मृग के रूप मे बौद्ध का उपदेश देते हुये दिखाया गया है।

9) मातृ पोषक जातक कथा :- पूर्व जन्म मे बुद्ध सफेद हाथी के रूप मे अवतरित हुये। बचपन मे ही इन्हे राजा ने पकड़वा लिया। जिससे उस शावक हाथी की माँ ने खाना पानी छोड़ दिया। इस बात को देखकर उस सफेद हाथी से बौद्ध धर्म की शिक्षा लेकर उसे छोड़ दिया। छोड़ने के उपरान्त अन्धी माता हथिनी के द्वारा किया गया लाल दुलार को मर्मगयता से दर्शाया गया है।

10) मार विजय कथा :- बुद्ध जब धर्म चक्र मुद्रा में ध्यान मग्न थे और उन्हें विशिष्ट उपाधि अर्थात इन्द्र की गद्दी पाने का श्रेय हासिल कर लिया। तो इन्द्र ने इनका तप भंग करने की कोशिश करवाई जैसे - कुछ लोग हाथियों पर बैठकर भाला व तलवार लेकर बुद्ध के सामने पहुँचे गए। किन्तु बुद्ध के कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कुछ राक्षस आँखे फाड़कर बुद्ध को डराने की कोशिश कर रहे हैं। तथा सुन्दर नृत्यांगनाओं द्वारा तप भंग करने की कोशिश कर रहे हैं। किन्तु बुद्ध के कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पृष्ठभूमि पर पर्वत दिखाए गए हैं। यहीं पर एक महिला अपनी सहेलियों सहित आईने में मुख देख रही है।

11) कई सौ चहरे :- इस चित्र में कई सौ चहरों को विभिन्न आकृति में दिखाए गए हैं।

12) राहुल समर्पण :- गौतम बुद्ध अध्यात्मिक उपदेश देते हुए विभिन्न स्थानों पर गए। इस दौरान यह अपने घर के द्वार पर भिक्षा मांगने पहुँचे गए। उनकी पत्नी यशोधरा ने एक मात्र पुत्र राहुल को भिक्षा में दे दिया। इस चित्र में महात्मा बुद्ध को बड़े आकार में प्रकाश पुंज युक्त बनाया गया है। तथा उनकी पत्नी व राहुल को अनुपातनुसार काफी छोटा बनाया गया है।

Teacher's Signature ....

यह इसलिए किया गया। क्योंकि सभी आकृतियों में बुद्ध को महान बनाते थे।

प्रसिद्ध कला विद्वान हैवेल व लॉरेन्स बिनियन ने इस चित्र की गणना कोमलता, प्रभावोत्पादकता और विशालता की दृष्टि से संसार के प्रसिद्ध चित्रों में की है। सुकुमारता व भव्यता का ऐसा संयोजन अत्यन्त दुर्लभ है।

षड्चक्र :- यहाँ पर षडरचक्र का आलेखन किया गया। इस चक्र के केन्द्र में अनेक प्रकार की आकृतियाँ बनाई गई हैं। जैसे - बाजार, उद्यान, गोष्ठि आदि। इस चक्र को एक व्यक्ति हाथ फैलाकर पकड़े हुए है। इसके किनारे पर एक सर्पाकार नदी का प्रवाह है। जिसके भय से लोग भाग रहे हैं। अधिकांश विद्वानों ने इसे संस्कृति का चित्र माना है।

गुफा न० 1 :- 5 वीं सदी में चित्रित की गई। इस समय के चित्रों में फारस से निकटतम सम्बन्ध दिखाए गए हैं। इन चित्रों में गुप्तवंश का प्रभाव दिखाई देता है। इस कारण इस गुफा में 5 वीं सदी का माना गया है।

चित्र :-
शिवी जातक :- पूर्व जन्म में भगवान बुद्ध शिवी नाम से अवतरित हुए और

बुद्ध का उपदेश दे रहे थे। इसी उपदेश को सुनने के लिए काशी नरेश की समस्त रानियाँ बुद्ध का उपदेश सुनने जा रही थी।

2) <u>बुद्ध के सीयन द्वितीय सभा का दृश्य</u> ⇒ पुलकेशिन की सभा का दृश्य दिखाया गया है। जिसमें फारस के राजदूत को सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है।

3) <u>चम्पेय जातक</u> ⇒ पूर्व जन्म में भगवान नाग के रूप में अवतरित हुए थे। इसी नाग को मुकुट पहनाए सिंहासन पर बैठे बनाया गया है।

4) <u>वज्र पाणी तथा पद्म पाणी</u> ⇒ इस गुफा का यह सर्वश्रेष्ठ चित्र है। जिसका आकार 2 फीट 8½ इंच × 5 फीट 4½ इंच लम्बे आकार में बनाया गया है। जिसमें मनुष्य के वास्तविक आकार से भी विशाल चित्र त्रिभंग मुद्रा में मांसल, शरीर, गोल कन्धे, रत्न जटित मुकुट, गलमुक्ता हार, दाहिने हाथ में कमल, कोमल कटि, क्षीण भौंहें युक्त बोधिसत्व कला संसार के महानतम चित्र के दर्शन कराता है।

Teacher's Signature ....

5) काली राजकुमारी ⇒ इस चित्र में एक राजकुमारी को इठलाते हुए यौवन के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। इसे काली राजकुमारी के रूप में नाम दिया है। यद्यपि इस चित्र में राजकुमारी का रंगांकन करते समय सिन्दूर का प्रयोग किया गया था। लम्बे समय के कारण मिलन से गन्धक का प्रभाव आ गया था। इसी कारण रसायनिक प्रभाव दिखाते हुए इस चित्र का रंग काला हो गया।

6) सांडो की लड़ाई ⇒ दो सांडो को लड़ते हुए दिखाया गया है।

7) विरहणी ⇒ इस चित्र में पतली कमर वाली विरहणी बैठी है। जिसका विरह रूप शान्त करने के लिए उसकी सखी सान्तवना दे रही है।

गुफा न० 2 ⇒ इसका चित्रण सबसे बाद में किया गया जो गुफा न० 1 के समाकालीन अर्थात गुप्त कालीन प्रतीत होती है। यद्यपि गुफा न० 2 में बौद्ध धर्म से सम्बंधित चित्रण कम हुआ किन्तु चित्रकला की दृष्टिकोण से अलंकरण के क्षेत्र में श्रेष्ठ है।

चित्र ⇒

1) महाहंस जातक कथा ⇒ पूर्व जन्म में बुद्ध हंस के रूप में अवतरित हुए जिसे

काशी राज ने बहरियों से इस हंस को पकड़वाया और काशी दरबार में उपस्थित किया। काशी राज ने अपने सिंहासन के सम्मुख एक ऊँचा सिंहासन इस हंस के लिए लगवाया और हंस को मुकुट एवं छात्र से सुसज्जित किया गया। चित्र में सम्पूर्ण काशी दरबार उपस्थित है। एवं खिड़कियों में से विभिन्न रानियाँ देख रही हैं। हंस बुद्ध का उपदेश देता है। और सभी काशी नरेश सहित राजदरबारियों ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। इसके उपरान्त इस हंस को सम्मान सहित जंगल में छोड़ दिया जाता है।

उपर्युक्त चित्र का वर्णन गुफा न० 17 में भी किया गया है। किन्तु गुफा न० 17 के चित्र संयोजन व इस चित्र के संयोजन में काफी भिन्नता है। तथा संगठन पद्धति में भी गुफा न० 17 में भिन्न है।

2) तृषित स्वर्ग :- इस चित्र में भगवान बुद्ध को स्वर्ग के सिंहासन पर बैठे हुए दिखाया गया है। जिसके दोनों तरफ मकर बने हुए हैं। भगवान बुद्ध धर्मचक्र परिवर्तन मुद्रा में बैठे हुए हैं। व पीछे प्रकाश पुंज बना हुआ है।

3) बुद्ध जन्म :- पीछे राजमहल का दृश्य दिखाया गया है। और महामाया उपवन में बनी हुई है। उपवन के बाहर एक भिखारी खड़ा है। इस भिखारी (इन्द्र) को चौकोर टोपी पहने दिखाया गया है।

Page No.
Date

4) वैराग्य सूचक साधु ⇒ एक दुबले-पतले भिखारी के हाथ से सब कुछ भिच्छा है। इसका संकेत करते हुए चित्रित किया गया है।

5) शान्तिवादन मुनि की कथा ⇒ शान्तिवादन मुनि बौद्ध धर्म का उपदेश दे रहे हैं। और काशीराज की समस्त रानियाँ बुद्ध का उपदेश सुनने चली जाती हैं। इसी बात पर काशी राज क्रोधित हो जाते हैं। और सभी रानियाँ काशी राज के डर से उनके चरण में पड़ी हैं। कोई डर से काँप रही है। कोई मुँह छिपाए रो रही है। कोई भागने के प्रयास में है। राजा क्रोधित मुद्रा में नंगी तलवार लिए बैठा है।

6) माया देवी का स्वप्न ⇒

7) बुद्ध जन्म के चित्र ⇒

8) मायादेवी तथा शुद्धधन के मध्य स्वप्न की चर्चा करते हुए।

9) झूला-झूलती हुई राजकुमारी

अजन्ता के चित्रों की विशेषताएं ⇒

☆ रेखा ⇒ अजन्ता के चित्र रेखा प्रधान हैं। मात्र कुछ रेखाओं से अजन्ता के चित्रों में सम्पूर्ण मनोभावों को व्यक्त किया गया है। यह रेखाएँ लयात्मक, प्रवाहमान, कोमल, लोचयुक्त होने के

Teacher's Signature ....

साथ -2 उभार, घनत्व और गोलाई लिए हुए है। अजन्ता में रेखाएँ भावों के अनुरूप बनाई गई है। कुछ जगह रेखाएँ कोमलता सौन्दर्य लिए हुए है तो कहीं -2 शक्ति, दृढ़ता के लिए स्पष्ट व गहरी रेखाएँ बनाई गई है। अजन्ता के चित्रों में कहीं -2 दुख, सहनाभुति, करुणा, प्रेम आदि भावों को व्यक्त करने के लिए शिथिल रेखाएँ बनाई गई है।

☆ रंग → अजन्ता के चित्रों में रंग अमिश्रित और चमकीले है। आकृतियों में सपाट रंग भर दिए गए है। छाया प्रकाश के सिद्धान्त का पालन नहीं किया गया है। आकृतियों में उभार दिखाने के लिए। आस -पास के रंग को कुछ गहरा कर दिया गया है। अजन्ता के चित्रों में गेरु, लाल, पीला, हरा, लाजवर्त के साथ सफेद व काला रंग भी प्रयोग में किया गया है।

☆ नारी सौन्दर्य → अजन्ता के चित्रों में नारी के सौन्दर्य स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पर जीवन के प्रसंगों में नारी को पुरुष की सहचरी के रूप में चित्रित की गई है। नारी के विभिन्न रूपों तथा भावों को अजन्ता के चित्र में बड़ी सुक्ष्मता अंकित किया गया है। यहाँ नारी को ममता रूपी माता के रूप में तथा कहीं पर मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में विघ्न के रूप में चित्रित किया गया है। कहीं -2 पर नायकी, चावरग्राहिणी आदि के

रूप में अंकित किया गया है।

अजन्ता के चित्रकारों में नारी को कहीं भी असुन्दर नहीं बनाया है। सौन्दर्य के परे नारी का चित्रण करना इन्हें पसंद नहीं है। नारी के प्रत्येक अंग का चित्रण बड़ी बारिकी से किया गया है।

☆ **भाव-भंगिमाएँ** ⇒ अजन्ता के चित्रकार चित्र की विभिन्न भंगिमाओं (मुद्राओं) के द्वारा विविध भाव कुशलता से प्रकट किया गया है। इन समस्त मुद्राओं में कोमल पात-पैरों की मुद्राओं को चित्रित किया गया है। जैसे → फूल तोड़ते, कोई फूल अथवा पात्र लिए, कुछ संकेत करते हुए, उपदेश देते हुए, मंजिरें बजाते हुए आदि अत्यन्त कमनीए मुद्राओं में चित्रित किया गया है।

☆ **आलेखन** ⇒ अजन्ता गुफाओं में छतों, दिवारों खिड़कियों आदि पर बहुत सुन्दर आलेखन बनाए गए हैं। इनमें प्रमुखत: कमल पुष्प की प्रधानता है। एक कोनों से कमलनाल निकलकर अनेक शाखाओं में विभक्त होती हुई सारे स्थान को पुरीत कर देती है। यहाँ पर कमल पुष्पों के साथ पशुओं और पक्षीयों का समावेश किया गया है।

प्रश्न

Q1. अजन्ता के चित्रों की विशेषताएं लिखिए?

Q.2. अजन्ता की खोज एवं इतिहास बताते हुए अजंता के चित्रों की विधि का उल्लेख किजिए।

Q.3. अजन्ता की गुफाओं में गुफा न० 17 के चित्रों की वर्णन करो।

Q4. अजन्ता के चित्रकला में गुफा नं. 17, 9, 19, 10, 1, 2 का संक्षिप्त वर्णन किजिए।

Page No. / Date

Lesson -3 **बाघ की गुफाएँ**

↳ **उद्भव** ⇒ बाघ की गुफाएँ विंध्याचल पर्वत से M.P से धार मार्ग पर स्थित है। इन गुफाओं इन गुफाओं की खोज 1818 में डेन्जर फिल्ड की थी किन्तु 1908 ई० में Leftinet कर्नल C.E लूआर्ड ने पुनः इस गुफा का परिक्षण किया। इन गुफाओं के समीप बाघ नामक ग्राम स्थित है। इसलिए इन गुफाओं का नाम बाघ पड़ा। किन्तु स्थानीय लोग इन्हें पंचपाण्डवों की गुफा बोलते हैं।

↳ इन गुफाओं का निर्माण 1050 फीट ऊँचे पर तथा 750 लम्बी दूरी में नौ गुफाएँ बनाई गई हैं। इन गुफाओं की गिनती उत्तर से दक्षिण की ओर की गई है। इसी पहाड़ी के नीचे से एक नदी बहती है।

↳ यह सभी गुफाएँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं। जो अजन्ता के उत्तर काल अर्थात् 4-5 सदी से बनी। इन गुफाओं का कार्यकाल इस बात पर तय किया गया की चित्र में "क" अक्षर शेष मिला। एवं इस अक्षर को हिरोजी से लिखा गया। "का" अक्षर की उत्पत्ति लगभग चौथी सदी में हुई थी दूसरा कारण यह रहा है कि महेश पति के महाराज सुबन्धु ने भगवान बुद्ध की रक्षा (अरपद) करने के लिए कलयन (बाघ) नाम ग्राम दान में दे दिया। यहाँ ताम्र पत्र इस गुफा की सफाई के दौरान मिला जिसका समय 416 से 466 ई

Teacher's Signature ....

महत्व रहा। बाघ अभिलेखात स्थल की इन गुफाओं का निर्माण चौथी या पाँचवी सदी में हुआ है।

बाघ की गुफाएँ :-

गुफा नं० 1 :-

1) **गृह गुफा** :- यह गुफा चौरे आकार की थी। जो चार खंभों पर टिकी हुई है। अर्थात 23×14 फीट के इस कमरे में बीच में पांच खम्भे भी हैं। इस गुफा की दशा काफी खराब है।

2) **पण्डुओं की गुफा** :- यह गुफा चैत्य गुफा है। इस गुफा के बाहर एक बरामदा भी काटा गया है। इस गुफा की दशा अच्छी है। किन्तु चमगादड़ों के कारण यहाँ के चित्र धुंधले पड़ गए। इस गुफा की विशेषता यह है कि मुख्य मण्डप में तीन तरफ कोठरियाँ भी काटी गई। जिन्हें गर्भ गृह भी कहा गया।

3) **हस्तिखाना** :- यह गुफा भी चैत्य गुफा है। किन्तु गुफा का आकार वर्गाकार है। इस गुफा में भी तीनों तरफ कोठरियाँ काटी गई हैं। किन्तु इस गुफा का बाहरी बरामदा गिर चुका है।

4) **रंग महल** :- इस गुफा का आकार बड़ा था। जिसमें सुन्दर चित्र प्राप्त हुए हैं। यह गुफा सम्भवत: आवास के लिए बनाई गई है। इसलिए इसका नाम रंग महल पड़ा।

5) इतिहासकारों ने इस गुफा की खोज बाद में की थी। यह गुफा विशाल आकार की है। इसका आकार 95 x 94 फीट है। इस गुफा में टेम्परा के सुन्दर चित्र प्राप्त हुए हैं।

6) इस गुफा की खोज बाद में हुई जिसका आकार 96x96 फीट है। इस गुफा में 5 कोठरियाँ काटी गई।

7) सातवीं, आठवीं व नवीं गुफा नष्ट हो गई हैं।

बाघ की गुफाओं के चित्र :-

1) **शोकाकुल नारी** :- चौथी गुफा के दरवाजे पर दो दृश्य अंकित हैं। एक चित्र में एक उच्च वर्गीय नारी को दुख पूर्ण मुद्रा में चित्रित चित्र मिला है। जिसे कुछ चित्रकारों ने भगवान बुद्ध के विरह में यशोधरा को माना है। पास ही उसकी सखी उसकी कहानी सुनकर शोकाकुल है। दाहिने हाथ में कपड़ा लेकर मुँह छिपाकर रो रही है। बायाँ हाथ प्रणय प्रसंग की ओर संकेत कर रहा है। दूसरी स्त्री सांत्वना दे रही है। ऊपर कबूतरों की जोड़ी बनाई गई है। जो निश्चित रूप में प्रणय प्रसंग की ओर इशारा करता है।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

2.) **नृत्य दल** :- एक स्त्री गायिका का दल है व नृत्य करते हुये सात नारियों का चित्र अत्यन्त मनोरम व भावपूर्ण है। इन स्त्रियों के हाथों में मंजीरे व छोटे-2 डण्डे वाद्य यन्त्रों की ताल पर थिरकती और मंजीरे बजाती सुन्दर मुख मुद्रा वाली नारियां अत्यन्त मनोरम और भली हैं। इन आकृतियों में सजीवता है। इतिहास कारों ने इस नृत्य दृश्य को 'हल्लीसक' नाम दिया है। यह चित्र बाघ के समस्त चित्रों में अपनी व्यवस्था, तथा सुन्दरता के कारण प्रसिद्ध है।

3.) **जुलूस** :- लगभग डेढ़-दर्जन लोग घोड़े पर सवार एक समूह के रूप में बाईं ओर जा रहे हैं। अश्वों की उन्नत ग्रीवाओं तथा घुड़सवार की मुख मुद्राओं को देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी विजयोल्लास में तल्लीन होकर किसी स्थान पर जा रहे हैं। घोड़ों का अंकन सुन्दरता से किया गया है। जिसमें घुड़सवारों के वस्त्र चुस्त व तड़क-भड़क युक्त बनाये गये हैं। व सिर पर सफेद, लाल व पीली पगड़ी बाँधे हुये हैं।

→ इस दृश्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह दृश्य किसी राजा के दल का या जुलूस का प्रतीक है।
दृश्य में 5 हाथियों का एक विशाल जुलूस का भी चित्र है। जिसमें महावत राजा तथा

Teacher's Signature ....

हाथ लिये सेवक चामर एवं झुलाती नारियाँ आदि सभी को शान्त मुद्रा में चित्रित किया है। सारा समुदाय मन्थर गति से आगे बढ़ रहा है।

4) **अन्य चित्र :-** गुफा संख्या 3 में एक बालिका सुडने की मुद्रा में है। जो अस्पष्ट है। इसके अतिरिक्त गुफा संख्या 4 व 5 में प्राकृतिक आलेखनों की भरमार है। यहाँ पर कमल पुष्पों की प्रधानता है। बेलों में पक्षी बड़े ही सुन्दर चित्रित किये गये हैं। साथ ही वृषभ एवं हाथी गतिशील अवस्था में चित्रित किये गये हैं।

→ **बाघ की विशेषतायें :-**

आलेखन :- बाघ की गुफाओं में प्रकृति का अंकन बहुत ही सुन्दर किया गया है। इन आलेखनों में फूल-पत्ते, पशु-पक्षी, शुक-सारिकायें, कोकिल, कपोत मोर-चकोर आदि सभी को चित्रित किया गया।

भारतीय कला :- भारतीय कला व साहित्य में यह सहयोगी प्रेरणा वर्धक व सन्देशवाह रहे हैं। इनका चित्रण बाघ गुफाओं के आलेखनों व चित्रों में उचित स्थान पर किया गया है।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

रेखांकन :- बाघ के चित्रों में रेखायें भी सबल, पुष्ट व गतिशील बनाई गई हैं। यहाँ के चित्र रेखांकन की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। इन चित्रों में पुष्प, गुच्छों, वल्लरियों, कमल नालों, लता आदि का सुन्दर रेखांकन हुआ है। लताओं का सुन्दर हुआ चित्रण किया गया। इन लताओं के बीच-2 पक्षियों को विविध रूपों में प्रदर्शित किया गया है। जैसे फल खाते हुये, चोंच लगाते हुये आदि अत्यन्त रोचक दृश्य चित्रित किये गये हैं।

→ पक्षियों और बेलों की रेखायें सबल व पुष्ट बनाई गई हैं। बाघ की गुफा की कलाकृतियाँ अपने में पूर्ण में विशिष्ट हैं। इन गुफाओं की कला देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि समुचित प्रकृति पशु-पक्षियों को गोद में लिये कला के माध्यम से मुखरित हो उठी है।

रंग योजना :- रंग योजना में अजन्ता की भाँति खनिज, रासायनिक व प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रमुखत: रामरज, खड़िया, हरिमिर्च, गेरू, टेराबर्ट ग्रीन (गाढ़ा हरा रंग), लेपिस लाजुली (नीला), पेवड़ी, पुष्पों व पत्तियों द्वारा रंगों को पीसकर गुड़ का पानी या चावल का माण्ड इन रंगों में मिश्रित करके प्रयोग में लाया गया।

Teacher's Signature ....

3/sep.

Page No. | Date

Section

Topic - [पाल] :-

100 वीं सदी में राजा हर्ष के पश्चात बंगाल की सत्ता लम्बे साल तक अव्यवस्थित रही। इस दिन दौरान न तो शासन कर सका व न ही जनता है उसे शासक के रूप में प्रमाणी कर सकी। इसी के चलते लगभग 100 साल पहले जन एवम् शासन व्यवस्था गड़बड़ा गई। ऐसे माहौल में संस्कृति एवम कला का निर्माण होना असम्भव था। अन्त में प्रजा ने मिलकर एक व्यक्ति को सर्वसम्मति से राजा चुन लिया।

यह घटना 750 ई. की है। इस व्यक्ति का नाम गोपाल था। गोपाल पाल वंश का था। इसीलिये इस समय के शासन (व्यवस्था), साहित्य, संस्कृति एवम् कला पाल शैली कहलाई। गोपाल के पश्चात उनका वंशज धर्मपाल गद्दी पर बैठा जिसने बंगाल में अपने साम्राज्य एक कमजोर शासक सिद्ध हुआ। जिसने अपने साम्राज्य का काफी हिस्सा सेन तथा गाल्यदेव जो ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित हो सके उनके कब्जे में चली गई। कुछ हिस्सा जो बचा उसे मुस्लिम आक्रान्ताओं ने अपने कब्जे में कर लिया और इस वंश को समाप्त कर दिया। इस प्रकार यह वंश ई. से (16) ई. तक राजनैतिक उथल-पुथल के चलते शासन किया। इसी दौरान जो कला बनी या जिस कला का निर्माण हुआ वह पाल शैली कहलाई।

Teacher's Signature ....

पाल वंश बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
इसीलिये इस समय के चित्रकार बौद्ध धर्म
से सम्बन्धित चित्र चित्रित किये।

पाल शैली की चित्रित पोथियाँ :

पाल शैली में
चित्रित पोथियाँ ताडपत्र पर चित्रण कार्य किया।
इन ताड चित्रों की चित्रों की लम्बाई 22/4 इंच है
चौडाई - 2 1/4 इंच। इन ही ताड पत्रों की छाप
सीधा सुखाकर चित्रण भूमि के रूप में या
चित्रपट के रूप में प्रयुक्त किया। जिन पर दो
इंच वर्गाकार या सवा इंच वर्गाकार क्षेत्र में
सम्बन्धित बौद्ध धर्म की कथाओं को चित्रित
किया गया। शेष हिस्से में

23

Topic → [आधुनिक चित्रकला]

→ ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने भारतीय लोगों को यूरोपीयन शैली में प्रशिक्षित करने के लिये यूरोपियन कलाकारों को नियुक्त किया। किन्तु वे भारतीय लोगों को यूरोपीयन शैली नहीं सिखा पाये। जबकि ब्रिटिशकाल में 1850 में मद्रास में ई.बी. हैवल व देवी प्रसाद राय चौधरी के नेतृत्व में 1854 में कोलकत्ता में अरविन्द नाथ टैगोर के नेतृत्व में 1857 में बम्बई व लाहौर में समरेन्द्रनाथ मु.. के नेतृत्व में कला महाविद्यालय खोला।

अगले चरण में →

जिनमें शान्तिनिकेतन में ई.बी. हैवल तथा नन्दलाल बोस को प्राचार्य बनाया।
लखनऊ में असित कुमार हल्दर
इन्दौर में दत्तात्रेय दामोदर देव लालीकर को प्राचार्य बनाया।

→ इसी प्रकार पंजाब स्कूल ऑफ Art में S. G. ठाकुर तथा जयपुर School of Art में शैलेन्द्र नाथ डे को प्राचार्य बनाया।

→ भारतीय लोगों ने उपरोक्त कला महाविद्यालय में कला शिक्षा नहीं ली। और परम्परागत शिक्षा पर ही टिके रहे।

1884 में मद्रास के प्राचार्य 1986 में ई. बी. हैवल ने भारतीय लोगों को यूरोपियन शैली से हटाकर मुगल शैली व राजस्थानी शैली में प्रशिक्षित करने की कोशिश की किन्तु इस पर भी भारतीयों ने उत्पात मचा दिया। अन्त में अवनिन्द्रनाथ ठाकुर को लेकर एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया। जिसमें प्राचीन भारतीय कला के गुणों जैसे अजन्ता को लेकर भारतीय लोगों से विचार विमर्श करके नया पाठ्यक्रम तैयार किया तो कला महाविद्यालय सुचारु रूप से चले।

इस समय के कुछ मयन चित्रकार जो भारतीय यूरोपियन एवं चीनी कला में अभ्यस्त थे उन्हें भारतीय कला में एक नई ऊर्जा प्रदान की। जिनमें मुख्यत।

- राजा रवि वर्मा,
- अवनिन्द्रनाथ टैगोर,
- असित कुमार हल्दर
- देवी प्रसाद रॉय चौधरी,
- यामिनी रॉय
- दत्ता-त्रेय देव लालीकर।

Page No. / Date

Father of Art

Q. राजा रवि वर्मा के चित्रों पर एक लेख लिखिये

Ans राजा रवि वर्मा का जन्म 29 April 1848 में केरल के एक गाँव किलीमन्नूर में हुआ था। लेकिन इनका पालन-पोषण त्रावण कोर राजघराने में हुआ। जहाँ पर तत्कालीन राजदरबारी चित्रकार (त्रावणकोर का चित्रकार) अलेग्री नाइडू (तंजौर शैली) में प्रशिक्षित किये गये।

— लेकिन राजा रवि वर्मा इतना सीखने के बाद भी कला के प्रति रुचि बढ़ती चली गई और यूरोपियन शैली के चित्रकार थियोडोर जानसन से यूरोपियन कला तेल रंगों में चित्रांकन का अध्ययन किया।

→ (राजा रवि वर्मा का निजी जीवन) –

राजा रवि वर्मा एक सामान्य परिवार में केरल के किलीमन्नूर गाँव में पैदा हुये लेकिन इनका त्रावण कोर राजघराने से नजदीकी सम्बन्ध था। इसीलिये त्रावणकोर का कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण त्रावणकोर की महारानी ने (रानी लक्ष्मी बाई) अपनी छोटी बहन के पुत्र रवि वर्मा को दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। इसलिये बचपन से ही इनकी परवरिश एवं शिक्षा त्रावणकोर राजघराने के अनुरूप किया गया। जिसके परिणामस्वरूप भारत को यूरोपियन शैली में एक श्रेष्ठतम चित्रकार दिया।

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

[राजा रवि वर्मा के चित्रों की शैली] —

राजा रवि वर्मा ने तंजौर-शैली में चित्रांकन आरम्भ किया। किन्तु बहुत ही कम समय में तैल रंगों के कलाकारों से पोर्टरेट (Portrate) का कार्य सीखा इसीलिये इनकी मूल चित्रकला शैली तैल रंग मानी जायेगी। किन्तु इन्होंने चित्रों के विषय भारतीय हिन्दु-धर्म से सम्बन्धित रखे हैं। इसीकारण भारत में इनके चित्रों की माँग अधिक होने के कारण जिस सामान्य वर्ग के लोगों को कम कीमत में चित्र उपलब्ध कराने हेतु मुम्बई में लीथोग्राफ की प्रेस-मशीन लगाई। जिससे कम समय में एक ही चित्र की सैकड़ों कॉपी तैयार करके सामान्य जनता तक घर-2 में चित्र पहुँचाये।

इन्होंने अपने चित्रों में हल्का पीला, भूरा, लाल, बैंगनी, हरा, काला रंगों का प्रयोग किया किन्तु चमकदार रंगों का प्रयोग नहीं किया।

चित्रों के विषय →

मुख्य तौर पर राजा रवि वर्मा ने पोर्टरेट एवं हिन्दु देवी-देवताओं से सम्बन्धित चित्र बनाये, जिसमें नायक-नायिकाओं के समान रुपाकारों की केश विन्यास एवं गहनों का प्रयोग किया है जिसमें मुख्यतः रामायण के रामलीला व भागवद्गीता से प्रेरित थे।

Teacher's Signature ....

Date

इसके अतिरिक्त विभिन्न राजा- महाराजाओं के पोर्टरेट जैसे - उदयपुर व बड़ौदा राजघराने के पोर्टरेट मुख्य हैं। एक चित्र ड्यूक व कनिंघम लॉर्ड इरविन का पोर्टरेट बनाया है। राजा रवि वर्मा के चित्रों में महिलाओं को सुन्दर, मांसल शरीर वाली नायिका के रूप में चित्रित किया गया है।

→ **वेशभूषा** :-

राजा रवि वर्मा ने पौराणिक वस्त्रों की खोज के लिये मथुरा, अयोध्या, उत्तर-भारत की यात्रायें की। किन्तु सफलता नहीं मिली। परिणामस्वरूप नाटक-मण्डली जैसे - रामलीला, कृष्णलीला, भरतहरि नाटक से प्रेरणा लेते हुये पारसी वस्त्रों का समावेश करते हुये भारतीय देवी देवताओं के चित्र बनाये।

→ **राजारवि वर्मा द्वारा चित्रित - चित्र** :-

श्रीकृष्ण - बलराम, इन्द्रजीत - दुर्योधन - द्रौपदी, सागर का गर्व मर्दन, विजय शान्ति दूत, सीता - हरण (सर्वश्रेष्ठ चित्र), द्रौपदी - माँ व शिशु, भीष्म प्रतीज्ञा, सरस्वती श्रृंगार, चाँदनी में हंसदूत, दरिद्रता, मेनका एवं नरेन्द्र,

Teacher's Signature ....

कुलिन महिलायें, ~~सब~~ नल - दमयन्ती
हंस और महिलायें, सागर, मंदोदरी,
गंगा व शान्तनु, जलाशय, उदयपुर का
किला, मत्स्य गंधी, रावण - जटायु युद्ध,
शकुन्तला, मंदिर में भिक्षा दान, ~~[illegible]~~
मैसूर दरबार, त्रावणकोर नरेश, नन्द - देवकी
साधु और मेनका, भिखारी - बालक,
मारवार जूर, कंजूस वृद्ध, प्रस्थान
सेवानिवृत्त, वामन अवतार, महिला और दर्पण,
परशुराम, सुकेशी, सागर मान भंग,
फूल बेचने वाले, पुष्पबालिका, केरल
का सागर तट।

Page No.
Date

[अवनीन्द्र नाथ टैगोर की आजीविका] → अवनीन्द्रनाथ टैगोर के पिता खानदानी रईस थे। इसीलिये इन पर कमाने का कोई बोझ नहीं था। किन्तु फिर भी एक उच्च कोटि के कलाकार रहते हुये अर्थोपार्जन जिसके लिये 1889 से 1905 तक रहकर कलकत्ता के School of Art उप-प्राचार्य Vice-Principal

→ 1905 से 1915 तक कलकत्ता School of Art में प्राचार्य के पद पर कार्यरत रहे। 1920 - 1941 के मध्य शान्तिनिकेतन के अध्यक्ष के पद कार्य किये। इसके अतिरिक्त मुगलशैली भारतीय भित्ति चित्रण जापानी जलरंग एवं यूरोपीयन के तैल रंगों के चित्र भी प्रचुर मात्रा में बनाये।

अवनीन्द्रनाथ के चित्र :→

1) कच एवं देवयानी
2) भारतमाता
3) निष्कासित यक्ष
4) ताजमहल
5) बुद्ध एवं सुजाता
6) बुद्ध का जन्म
7) तिष्य रक्षिता
8) हेनसांग
9) जीवनसंध्या
10) माँ - शिशु

प
र
म -

Teacher's Signature ....

11) कृष्ण गजासुर वध
12) सूर्य - पूजक
13) मामा का अन्त
14) अमर खय्याम
15) स्वप्न लोक में रवीन्द्र
16) अलीबाबा
17) खलीफा
18) अरेबियन नाइट्स
19) एक वृद्ध महिला
20) जमना देवी

– पटना शैली

21) मुगल शैली के चित्र ⟶
- ताज का स्वप्न
- ताज का निर्माण
- राधा-कृष्ण
- शाहजहाँ द्वारा ताज की अन्तिम झाँकी
- औरंगजेब

22) मौलिक शैली के चित्र ⟶
- ध्यान मग्न बुद्ध
- कमल पत्र पर अश्रु बिन्दु
- जावा की नर्तकी
- चैतन्य
- बंगाल के प्राकृतिक दृश्य

2

Teacher's Signature ....

Page No.
Date

अवनीन्द्रनाथ टैगोर की चित्र शैली :-

हम पहले भी अध्ययन कर चुके हैं कि अवनीन्द्रनाथ टैगोर जापानी, यूरोपीयन, भारतीय, चीनी एवं फारसी में अच्छे अनुभवों के साथ चित्रण किया।
जिससे एक नई शैली का उद्भव हुआ। उसे वाश तकनीक कहते हैं। इनके रंगों में उच्च-प्रदेशों के लिये जल रंगों में पेस्टल रंगों का प्रयोग किया।
मानव त्वचा के लिये पेस्टल लाल, हल्के भूरे, बैंगनी, हरे, व धूसर पृष्ठभूमि का प्रयोग करते हुये चित्रांकन किया।

→ इन्होंने 1951 में अपने चाचा रवीन्द्रनाथ टैगोर का चित्र बनाया। जिसका शीर्षक "महाप्राण" चित्रित किया। इसके पश्चात हमेशा - 2 के लिये चित्र चित्रण करना बन्द कर दिया।

विशेषतायें :-

1. ~~अवनी~~ अवनीन्द्रनाथ चीनी, जापानी, एवं भारतीय कला में अभ्यस्त होने के कारण इनकी कला में कल्पनाशीलता है। किन्तु यूरोपियन शैली के प्रभाव से यथार्थ-वाद को भी समन्वय किया गया है जैसे, एक माला में कई प्रकार के मोती सजा रखे हो

Teacher's Signature ....

2.) जल रंगों चित्रांकन के पहले भारतीय कलाकार थे जिन्होंने चीन के कलाकारों से जल रंगों में चित्रण का कार्य किया। जिसके परिणामस्वरूप वाश तकनीक का अविष्कार हुआ।

3.) यूरोपीयन शैली के प्रभाव से यथार्थवादी चित्रण किया जिसमें लघुचित्रों में भी छाया प्रकाश का प्रभाव देने हेतु खतपरछाव के साथ में छाया परछाव का अविष्कार किया। जिससे सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण भी चित्रण में समा गये।

4.) प्रकृति चित्रण में पेड़, गाँव, नौका, नदियाँ वनस्पति से लहराते खेत, हल्के भूरे, बैंगनी, हरे एवं लाल रंगों की धूसर पृष्ठभूमि पर गहरे चमकीले रंगों द्वारा चित्रांकन किया गया।

5) इनके विषयों में लोक कथाओं, लोक गीत, रीति-रिवाजों, ऐतिहासिक दृश्य, को प्रमुखता से चित्रण किया।

→ भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी ने समन्वय का कार्य किया। ठीक उसी प्रकार अवनीन्द्रनाथ ने चित्रकला में समन्वय करने का कार्य किया।

Page No.
Date

Topic -

यामिनी राय की कलाओं को समझाओ?
यामिनी राय का जन्म 1887 में बंगाल के बाकुरा जिले में हुआ था। इन्होंने बंगाल में रहते हुये प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की तथा बंगाल स्कूल से चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की किन्तु बाद में जाकर इन्होंने बंगाल शैली से अपने आप को दूर कर लिया। और एक नवीन भारतीय कला का सूत्रपात किया। जिसमें यूरोपीयन शैली घनवादी तथा प्रभाववादी शैली से प्रभावित रहे।

→ ये प्रथम चित्रकार थे, जो बंगाल स्कूल में रहते हुये सबसे ज्यादा तैल रंग का प्रयोग करके चित्रांगन किया। इसीलिये इन्हे भारत का ~~पिकासो~~ (पिकासो) भी कहते हैं।

→ चित्रकला के विषय -
इन्होंने सामान्य जनजीवन जैसे लोक-कला, कुम्हार, बुनकर, गुड़िया, खिलौने, आदिवासी लोग एवं इनकी संस्कृति को चटक लाल, पीला, नीला, काला भूरा, रंगों को अमिश्रित लगाया है। जिसमें पारम्परिक रंगों का जैसे खड़िया, मिट्टी, सिंदुर, इमली, नील, हींगलू, गोंद, काजल का प्रयोग किया।

Teacher's Signature ....

पटचित्रण हेतु कपड़ा, कैनवास तथा प्लाईबोर्ड का प्रयोग किया। जिनमें से कैनवास पर तेल रंग से चित्रण बनाये गये हैं तथा प्लाईबोर्ड पर टेम्परा पद्धति से पारम्परिक रंगों से म्यूरल बनाया।

(भीति चित्र)

→ यामिनी राय के प्रसिद्ध चित्र ⇒

माँ-शिशु, मृदंगवादक, संथाल स्त्रियाँ, सीता की अग्नि परीक्षा, टैगोर और बापू, पुजारिनें, रथ-यात्रा, घोड़ा-गाड़ी, रामभक्त हनुमान, बिल्ली, तीन-योद्धा, पंचवटी में स्वर्ण मृग, बहनें, मुख्य चित्र

Date ___ /___ /______

Question 1 नन्दलाल वासु द्वारा चित्रकला में दिया गया योगदान का उल्लेख करो।

नन्द लाल वासु का जन्म 1883 में बिहार राज्य के मुंगेर जिले के हवेली खड़गपुर नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री पूरण चन्द्र वासु था जो एक इंजीनियर थे और उनकी माता का नाम क्षेत्रमणि था जो स्वयं एक शिल्पकार थे अतः नन्द लाल वासु को बचपन से ही कलाभिरुचि पैदा हुई।

शिक्षा :-

नन्द लाल वासु की प्रारंभिक शिक्षा खड़गपुर ग्राम से हुई। माध्यमिक शिक्षा कलकत्ता विद्यालय 1902 में हुई। उनके पश्चात शांतिनिकेतन से कला की शिक्षा 1905 में पूर्ण हुई। वे अवनीन्द्रनाथ टैगोर के प्रिय शिष्य थे। इसलिए अवनीन्द्रनाथ टैगोर के साथ बर्मा, मलाया, चीन, जापान, श्रीलंका, आदि देशों की यात्रा की। 1903 ई. में उनका विवाह हुआ।

नन्द लाल वासु द्वारा बनाये गये चित्र —

सती का देह त्याग नामक चित्र रामायण से प्रेरित होकर बनाया जिस पर इण्डियन सोसायटी ऑफ आर्ट ओरियण्टल आर्ट में 500 रुपये का पुरस्कार मिला। इसी प्रकार रामायण से सम्बन्धित अन्य चित्र निम्न हैं — रामचन्द्र विदाई, उमा का तप,

Date ___ / ___ / ______

अहिल्याबाई होल्कर एवं झांसी रानी का देह त्याग

महाभारत से सम्बन्धित चित्र — शकुन्तला, शतरंज खेलते कौरव पांडव, कृष्ण अर्जुन, कुरुक्षेत्र, धृतराष्ट्र एवं गांधारी, बुद्ध और मैत्री, शिव का मंथन, [illegible], गंगा व तूफान, महिषासुर मर्दिनी, दुर्गा वीणा वादिनी,

ईसाई धर्म से सम्बन्धित चित्र है— मछुआरों के मध्य ईसा

ऋतु एवं उत्सव से संबंधित चित्र — बसंत काल से पतझड़, दीपक ज्योति, बसन्त शांति, बसन्त उत्सव, तूफानी पवन का झोंका, [illegible] पूजा, जल रंगों द्वारा चित्रित किये गये।

व्यक्ति चित्र से सम्बन्धित चित्र —

(1) C.F. एन्ड्रयूज
(2) K.N. मजूमदार
(3) सुरेन्द्र गोस्वामी
(4) ~~श्री~~ हरेन्द्र मुखर्जी
(5) अब्दुल गफ्फार खाँ [illegible] चित्र बनाये जो तेल रंगों में चित्रित थे।

जनजीवन से सम्बन्धित चित्र — ग्राम में कहीं, सन्थाल युवती, चण्डालिका के [illegible] महिलाएँ, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रंगों से चित्रित

Page No. [ ]

Date ___ /___ /______

किये है।

ऐतिहासिक चित्र है — (1) पद्मावती एवं अभीसिंह (2) मीरा बाई का जीवन (3) शाहजहाँ (4) महात्मा गांधी की दांडी यात्रा (5) अभिसारिका।

जीव जन्तु से सम्बन्धित चित्र — शावक, पुष्प, जलता हुआ चीर का वृक्ष, सिंह, ऊँट, लोमड़ी, टिड्डा, गिलहरी, सफेद पक्षी, भैंसों का झुण्ड, हरिण का कपोत, गधा चित्रित किये।

जीवन के प्रमुख कार्य —

(1) 1903 में विवाह हुआ।
(2) 1919 में वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु के मन्दिर में महाभारत का चित्रण किया।
(3) 1950 ई. में डॉ. की उपाधि दी गई।
(4) 1951 में शान्तिनिकेतन से रिटायर हो गये।
(5) 1952 में शान्तिनिकेतन में देशिकोत्तम उपाधि दी गई।
(6) 1957 में पद्मभूषण दिया गया।

उन्होंने दो पुस्तकें लिखी।

(1) शिल्पकला (रूपावली)
(2) ~~रूपावली~~ शिल्पचर्चा।

नन्दलाल बसु ने बाघ की गुफाएँ भी चित्रित किए जो डाकडयन मीनियाचर के नाम से भी जानी जाती है।

Date ___ / ___ / ___

Question यामिनी राय की कला को समझाइए।

यामिनी राय का जन्म 1887 में बंगाल के बांकुरा जिले में हुआ था। इन्होंने बंगाल में रहते हुए प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की तथा बंगाल स्कूल में चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की किन्तु बाद में जाकर इन्होंने बंगाल शैली से अपने आप को दूर कर लिया और एक नवीन भारतीय कला का सूत्रपात किया। जिसमें यूरोपियन शैली घनवादी तथा प्रभाववादी शैली से प्रभावित रहे।

ये प्रथम चित्रकार थे, जो बंगाल स्कूल में रहते हुए सबसे ज्यादा तैल रंग का प्रयोग करके विकसित किया। इसीलिये इन्हें भारत का पिकासो भी कहते हैं।

चित्रकला का विषय –
इन्होंने सामान्य जनजीवन जैसे लोककला, कुम्हार, बुनकर, गुड़िया, खिलौने, आदि वाले लोग, एवं उनकी संस्कृति को चटक लाल, पीला, नीला, काला, भूरा, रंगों को अमिश्रित लगाया है जिसमें पारम्परिक रंगों को जैसे खड़िया, मिट्टी, सिंदूर, इमली, नील, हिंगलू, गोंद, काजल का प्रयोग किया। पट चित्रण हेतु कपड़ा, कैनवास तथा प्लाईबोर्ड का प्रयोग किया।

जिन में से कैनवास पर तैल रंग के चित्रण बनाये गये। तथा प्लाईबोर्ड पर टेम्परा पद्धति से पारम्परिक रंगों से म्यूरल बनाये।

Page No.

Date ___ / ___ / ______

यामिनी राय के प्रसिद्ध चित्र —

मॉं, शिशु, मृदंगवादक, सनथाल स्त्रियाँ, सीता की अग्नि परीक्षा, टैगोर बापू, पुजारी ने, रथयात्रा, घोड़ागाड़ी, राम भक्त हनुमान, बिल्ली, तीन-योद्धा, पंचवटी मे स्वर्ण मृग, बहुमूल्य चित्र है।

Date ___ /___ /______

असित कुमार हल्दर की कला की यात्रावृतांत लिखो।

असित कुमार हल्दर का जन्म 1890 ई. में कलकत्ता में कवि एवं कलाकार राखलदास के गोद लिए हुए पुत्र थे वे स्वयं भी एक कल्पना शैली भावपक्ष चित्रकार थे। साथ ही शिल्प कला के आलोचक कवि, विचारक एवं दक्ष शिक्षक रहे। इनकी शिक्षा कलकत्ता से हुई एक कला शिक्षा शान्तिनिकेतन में अवनीन्द्रनाथ टैगोर से 1911 में शिक्षा ली। इसके पश्चात् लियोनार्डो जेनिंग्स नामक वास्तुशिल्पी से कलकत्ता में शिक्षा ली। इसके पश्चात् शान्तिनिकेतन में कला शिक्षक बने। 1924 ई. में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट जयपुर के प्राचार्य बने।

1925 - 1945 तक लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट के प्राचार्य रहे। 1964 में इनके पूर्व सामान्य परिवार में मृत्यु हुई।

चित्रण कार्य :-

भित्ति चित्रणी चित्रण के रूप में अजन्ता, बाघ, जोगीमारा की गुफाओं के चित्रों की अनुकृति तैयार की। इसके अतिरिक्त सौल के व्यापारी, महाकाली, निर्माता अकबर, कुणाल श्रेष्ठ चित्र है। धार्मिक चित्रों के विषयों में अशोक वन में सीता, राम लीला, कृष्ण यशोदा, दमयन्ति एवं हंस, रहस्यमयी प्रकृति, सर्वरआग्नि (स्वर ज्वाला), मोह भंग, बहु मूल्य भेंट, बन्दी, राजकुमार आगमन आलिंगन, वेणुकन्या, जवाब दमाई रंग, नित्यानंद मुख्य चित्रों में गिने जाते है। इन्होंने टेम्परा, जल रंग, तैल रंग सभी माध्यमों में चित्रण किया है।

Page No. ____

Date ___ /___ /______

असित कुमार द्वारा लिखित पुस्तके :-

1. मेगदूत का बंगला भाषा में अनुवाद किया।
2. ऋतु संहार का भी बंगला भाषा में अनुवाद किया।
3. इंडियन कल्चर एट ए ग्लास
4. गौतम गाथा
5. भारतीय चित्रकला
6. ललित कला की धारा
7. रूप दर्शिका

उपरोक्त श्रेष्ठ पुस्तके हैं। आज की पीढ़ी में कला के विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्त किया जा रहा है।

Date ___ /___ /______

अमृता शेरगिल की कला की यात्रावृतांत लिखें।

अमृता शेरगिल का जन्म 1913 ई. में यूरोप में हुआ था। उनके पिता का नाम उमराव सिंह था और उनकी माता हंगेरियन थी। इसलिये वे बचपन से ही यूरोप में ही रहकर कला शिक्षा प्राप्त की। इनके गुरु का नाम ब्युसिन सिमोन थे जिनसे तैल रंग में शिक्षा प्राप्त की। 1921 में पहली बार यूरोप आया और भारत कला और संस्कृति देखा जिससे प्रेरित होकर पुन: पेरिस चले गए।

1929–1934 तक - अकेडमी - द - बाजार में पेरिस में लगातार 5 वर्ष तक शिक्षा ली। परिणामस्वरूप लगातार 3 साल तक, पेरिस का प्रथम पुरस्कार मिला। 1932 में ग्रांद शैली में प्रदर्शित की। और यूरोपीयन कलाकारों को कम्युनिटी में स्थाई मेम्बर बन गये। तथा ओल्ड मास्टर्स की प्रदर्शनियां देखी। जिनमें से गॉगव, पिकासो, देगास का इनकी चित्रकला में प्रभाव पड़ा साथ ही, निकोलस, रोरिक, अजन्ता, मुगल एवं राजपूत, पेंटिंगों पर भी इनका स्थाई प्रभाव पड़ा। इनके प्रिय साहित्यकारों में दोस्तायेवस्की, टालस्टाय एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रिय साहित्यकार थे। अब ये यूरोपीयन भारतीय एवं जापानीकला का सामंजस्य से एक नई शैली का उद्‌भव हुआ। जो हम इनके चित्रों में देख सकते है।

Question 1. शुंग वंश की स्थापना एवं कलात्मक योगदान कीजिए

मौर्य वंश की मौर्य वंश के पश्चात् शुंग वंश की स्थापना हुई। पुष्यमित्र शुंग है। प्रथम राजा बने। उस वंश का कार्यकाल 184 ई. पू. से 30 ई. पूर्व तक रहा। यह वंश बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसलिए सभी कलात्मक स्मारक एवं मूर्तियाँ बौद्ध धर्म से संबंधित बनाई गई। किन्तु यत्र तत्र हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हुए। फलक (चित्र) उत्कीर्ण किए गए। जिसमें मुख्यत: स्तूपों के तोरंद्वार वेदिका व सामग्री का निर्माण किया।

मूर्तियाँ विशाल आकार की बनाई गई जिसमे चन्द्र, यक्ष - यक्षिणी, चूल कोका, महु कोका सुदर्शना, गजलक्ष्मी, अप्सरा धर्मचक्र, लोकजन कथा ध्वज पशु - पक्षी नाग नागिन, वन्तुभ पशु - पक्षी, सिंह सिंध हाथी एवं स्तूपों के निर्माण में समस्त योगदान किया। जिसमें से मुख्यत, का स्तूप, भरहुत का स्तूप अमरावती का स्तूप कला के दृष्टिगोचर अद्भुत है।

सॉंची का स्तूप - सॉंची का स्तूप मध्यप्रदेश के भोपाल के पास में स्थित है। इसका निर्माण समाधि वाला भाग सम्राट अशोक ने करवाया था। किन्तु इसका तोरंद्वार एवं बाढ़ का निर्माण शुंग काल में हुआ। इस स्तूप का व्यास 120 फीट है तथा इसकी

Date ___ /___ /______

ऊंचाई 54 फीट है, जिस पर 16 फीट ऊंचाई का चबूतरा स्तूप के चारो ओर बना हुआ है जो प्रदक्षणा पथ का कार्य करता है। इस चबूतरे पर चढ़ने के लिए चारो दिशाओं मे दोहरी सीढ़ियाँ बनाई गई। इस स्तूप के चारो ओर सुन्दर उत्कीर्ण पत्थरो की बाढ़ लगाई जिसकी ऊंचाई 7 फीट है। इसमे एक खम्भे से दूसरे खम्भे के बीच मे तीन - तीन बड़ेरियाँ लगी हुई है। जिन पर जातक कथाओ से सम्बन्धित दृश्य उत्कीर्ण है। इस स्तूप के चारो दिशाओ मे चार तोरद्वार है। जिसकी कुल ऊं 34 फीट है। जो 14 फीट ऊंचे खम्भे पर टिकी है। इस खम्भे पर बड़ेरियाँ लगी है। उसके पश्चात् तीन पत्थर के ब्लॉक्स रखे है।

ये बड़ेरियाँ दोनो तरफ से गोलाई लिए गए है। अब इन ब्लॉक्स के ऊपर पुन, बड़ेरियाँ रखी गई है इसके ~~पश्चात~~ पश्चात पुन, तीन ब्लॉक्स रखे गये है जिनके ऊपर अन्तिम बड़ेरी रखी गई। इस बड़ेरी के ऊपर चामरधारियों या अन्य कोई यक्ष - यक्षिणी की मूर्ति लगाई गई है। इस तोरद्वार के मध्य मे सबसे ऊपर धर्म चक्र है। जो अब ~~टू~~ टूट गया है। इस प्रकार से इस तोरद्वार की ऊंचाई 34 फीट हो जाती है।

स्तूप के ऊपर बुद्ध की अस्थियों को रखा जाता था। जिसके ऊपर छत्र भी

Page No. ___